International Journal of Applied Research 2022; 8(3): 91-93

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(3): 91-93
www.allresearchjournal.com
Received: 14-12-2021
Accepted: 19-01-2022

डॉ. विमलेन्दु कुमार विमल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस0 एम0 आर0 सी0 के0
महाविद्यालय, समस्तीपुर
सम्पर्क–ग्राम–सिरदिलपुर,
पो0–पटोरी जिला–समस्तीपुर
बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विमलेन्दु कुमार विमल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस0 एम0 आर0 सी0 के0
महाविद्यालय, समस्तीपुर
सम्पर्क–ग्राम–सिरदिलपुर,
पो0–पटोरी जिला–समस्तीपुर
बिहार, भारत

जीवन का सार तत्त्वः भावतरंगिणी

डॉ. विमलेन्दु कुमार विमल

सारांश
कविवर द्वारिका राय 'सुबोध' का जन्म 01 जुलाई, 1944 को बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला अंतर्गत ग्राम–सिरदिलपुर के एक किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 केश्वर राय और माता का नाम शुकनी देवी था। ये बचपन से मेधावी छात्र थे। इनकी शिक्षा–दीक्षा एम. ए., हिन्दी और बी0एल0 तक हुई। इनके द्वारा प्रणीत अबतक 8 पुस्तकें हैं, जिनमें प्रमुख हैं –'गीत तुम्हारे नाम', 'मन वृन्दावन,' 'प्राणों की बांसुरी', 'सांसों के सरगम', 'यों न भुला दीजिए'। रूचि के अनुसार ही इनको भारतीय रेल में वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य करने का मौका मिला। इनकी प्रतिभा को देखते हुए और राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, पूर्व क्षेत्र कोलकाता एवं महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर ने पुरस्कृत किया।

कूटशब्दः जीवन, सार तत्त्व, भावतरंगिणी, ग्राम–सिरदिलपुर

प्रस्तावनाः
द्वारिका राय 'सुबोध' विरचित नव काव्य संकलन 'भावतरंगिणी' जीवन का सार तत्त्व है। इस संकलन के अवलोकन से पता चलता है, जैसे नदी में तरंगें गतिमान होती रहती हैं, उसी तरह कवि के मन में विचारों का संगुफन भावनाओं की ज्वार पर तरंगित होती रहती है। जिसके कारण 'भावतरंगिणी' कविरूपी मनःस्थिति की स्वप्नप्रभा नदी है, जिसमें वेगवती धारा के रूप में जीवन का सार तत्त्व प्रवाहित हो जीवन को साकार कर रहा है। इस काव्य संकलन की 171 कविताएं 5 खंडों में विभाजित होकर इन्द्रधनुषी आभा से दीप्त हो कविता रूपी नदी के रूप में प्रवाहित हो रही है।
'भावतरंगिणी' के पहले खंड 'प्रेम–प्रसंग' में उनचार रचनाएं हैं, जिसमें समष्टि जन पीड़ा की उत्कंठा और बेचैनी तो है ही, साथ ही इसमें प्रेम के विलक्षण स्परूप संयोग और वियोग की पराकाष्ठा भी है। तभी तो वसंत की आहट के साथ जाड़े की ठिठुरन भी अपनी कला में मूर्त रूप लेकर जीवंत हो उठी है।
कविता हृदय की मंदाकिनी है जिसमें जीवन के राग–द्वेष प्रवाहित होते रहते हैं [1], क्योंकि जीवन जीना सरल नहीं है। इसमें झंझावातों की झुरमुठ उगते रहते हैं, जिसमें कवि अहर्निश गोते लगाने के क्रम में भूत, भविष्य और वर्तमान की रूपरेखा से अवगत होता रहता है। जिसके कारण जीवन जीने की सच्ची अनुभूति का आनंद मिलता है। कहा गया है–'प्रेम बिना सब शून्य है।' प्रेम के बिना जगत की कल्पना नहीं की जा सकती। जिस दिन प्रेम का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा, उस दिन संसार का भी अस्तित्व मिट जायेगा, तभी तो कवि इस प्रेम खंड में कहता है –

''प्रेम करो जीवन में दिल से,
प्रेम बिना जीवन कैसा
प्रेम, प्रेम हे भुवन–विमोहन
पवन गंगाजल जैसा।''

यह प्रेम का विलक्षण स्वरूप है, जो अनुपम है, आदरणीय है।
लोकगीत भारतीय संस्कृति की धरोहर है। जिसमें जीवन की समस्त क्रियाएं समाहित होती रहती हैं। जीवन की सोहलों कलाओं का वर्णन लोकगीत में स्वतः स्फूर्त होते रहता है। तभी तो इसे लोक जीवन का संगीतमय पिटारा कहा जाता है। प्रगतिवादी कवि नरेन्द्र शर्मा लोक स्वर को लय देते हुए लिखते हैं –

'माघ गया, फागुन ढिग आया, आ जा पास बटोही!

आन गांव में विलम न जाना, ओ बालम निर्मोही!
मन पर भार विरह का जैसे दीये पर कजरौटा!
एक साल के बाद बटोही, फागुन बनकर लौटा!

उसी प्रकार कवि 'सुबोध' ने लोकधुनों को अपनी गीत विधाओं का आधार बनाया है जिसमें जीवन का रहस्य छिपा है –
'साजन को पाकर भी क्यों रोई सजनियां
माया के बाजार से जब चली दुल्हिनियां,
देखने न पाई वो घूंघट उघार के,
कैसे मिटावे कोई विधना लिलार के!

दाम्पत्य प्रेम की यही सचाई है। जिसमें जीवन का बागडोर डुबता–उतराता रहता है, जिसे कवि ने बड़ी सहजता से पिरो दिया है। इस तरह का मनोरम उद्‌गार लोकधुनों में ही सम्भव है। इस गीत से संकलन की शोभा बढ़ गयी है क्योंकि ऐसा प्रायः अन्य ग्रन्थों में देखने को नहीं मिलती है।
संकलन के दूसरे खंड 'प्रकृति–प्रसंग' में कुल अठाईस कविताएं संकलित हैं। [2] जिसमें प्रकृति के विविध रूप साकार हो उठे हैं, विभिन्न ऋतुओं के वर्णन के साथ मौसम की अठखेलियाँ भी इसमें दृष्टिगोचर हुई हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी की तरह कविवर 'सुबोध' भी प्रकृति के मुखर गायक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं। जिसके कारण इनके काव्य में प्रकृति वर्णन में प्रकृति के सुन्दर और भयंकर दोनों रूपों का वर्णन मिलता है। 'भावों का परिवर्तन' कविता में कवि विचार धारा के परिवर्तन को विराट रूप में चित्रण करता है। यह कल्पना थोड़े में बहुत कुछ व्यक्त कर देता है –

'प्रकृति नटी करती रहती नर्तन
होता है भावों का परिवर्तन!
मौसम की है छाई रंगीनी,
आती है सुगंध भीनी–भीनी!

परिवर्तन सदैव सत्य है, तभी तो यह गुलजार बना रहता है।
संकलन के तीसरे खंड 'सामाजिक प्रसंग' में कुल अनठावन रचनाएं संकलित हैं जो महाकवि 'निराला' और 'दिनकर' के सन्निकट ले जाती हैं। [3] जिसमें सामाजिक, राजनैतिक, भाषायिक, मानवीयता, राष्ट्रीयता, प्रेमशीलता, स्नेहशीलता का मणिकांचन मेल है। 'पाक की नापाक साजिश' कविता कवि को राष्ट्र चितेरा के रूप में प्रतिष्ठित करती है –

'भारतमां के अमर सपूतो!
धन्य तुम्हारी बलिवेदी,
राष्ट्रप्रेम के पुण्य पंथ पर,
जीवन की कुरबानी दे दी।'

छायावादी काव्य की श्रृंगारिकता, प्रेम, नाद, सौंदर्य, प्रकृति के माध्यम से अपनी बात कहने की प्रवृत्ति 'सुबोध' जी के काव्य में अनायास ही मिल जाती हैं। इनके काव्य में ऐसे प्रसंगों की कमी नहीं जो पाठक के हृदय को छू न सके। पाठक हठात् सोचने के लिए मजबूर हो जाता है, कि इतनी संवेदना –

'सुख की रजनी बीत गई है डूबे चाँद–सितारे,
सूनी–सूनी–सी आंखों से ऊषा आज निहारे,
रसवंती रसहीन बनी है, खोया रूप बसंती,
मन के सारे गीत थके हैं सकुचाई लजवंती।'

भारतेन्दु और निराला की तरह कवि 'सुबोध' भी राष्ट्रभाषा के प्रति सजग हैं। उन्हें विदेशी भाषा से लगाव तो है, लेकिन अपनी भाषा प्यारी है। तभी तो वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठावान हैं। जिस तरह भारतेन्दु अपनी भाषा को उन्नति के शिखर पर देखना पसंद करते थे –

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय के शूल।।'
उसी तरह कवि 'सुबोध' भी अपनी भाषा की प्रगति के प्रति आशान्वित हैं –

'हिंद देश की प्यारी भाषा हिन्दी जिसका नाम,
देवनागरी जिसकी लिपि है लगती ललित ललाम।
x x x

जिस भाषा के उद्‌घोषों ने छेड़ा वह संग्राम,
नवल जागरण का इससे ही उन्मेषित परिणाम।'
राष्ट्रभाषा हिन्दी राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है जिसे सजाना–संवारना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है।

संकलन के चौथे खण्ड 'चारित्रिक प्रसंग' में पंद्रह रचनाएं संकलित हैं। जिसमें कवि नूतन–पुरातन कवियों, मनीषियों, राजनेता, संत–महात्मा को याद कर अपनी लेखनी को धन्य किया है, जो उनकी विलक्षण प्रतिभा के परिचायक हैं। जिनमें 'तथागत', 'विद्यापति', कबीर, तुलसीदास, दिनकर, नागार्जुन, अटलविहारी वाजपेयी और जननायक कर्पूरी पर कविता मनमोहक है।
मानवतावादी सद्‌भावना की चर्चा करते हुए कवि बुद्ध के दृष्टिकोण को याद करते हुए अपनी 'तथागत' कविता में कहता है

'कपिल वस्तु के राजकुंवर ने
करुणा का था भाव जगाया,
जन–जन को मिलजुलकर रहना,
मनवता का पाठ पढ़ाया।'

अपने अटल विचारों पर अटल रहने वाले अटलविहारी वाजपेयी को याद करते हुए कवि अलख जगाते हुए
'न भूतो न भविष्यति' का संदेश देते हैं –

'मतभेद' भले हो पर 'मनभेद' नहीं होना चाहिए,
आपस में वैर और फूट का बीज नहीं होना चाहिए,
लौटकर आऊँगा कहकर गए हैं अटलविहारी जी
हमें सुअवसर को कभी भी नहीं खोना चाहिए।'
कवि कुलभूषण 'दिनकर' कविता में कवि राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर' को याद करते हुए उनकी समस्त काव्यकृति का नाम उजागर कर अपने को कृतार्थ किया है, जो कवि की विलक्षण प्रतिभा को दर्शाता है [4] –

'रश्मिरथी'–सा महाधुरंधर 'कुरूक्षेत्र' का वीर
'परशुराम की ' सतत 'प्रतीक्षा' प्रतीक्षित रणधीर।
x x x

जिसने अंतिम बार लिखा था 'हारे को हरिनाम'
वाणी के उस वरदपुत्र को कोटि–कोटि प्रणाम।'

कवि इस खंड में अतीत गौरव, वर्तमान का यशगान और देश की मंगल कामना का आह्‌वान करता है।

संकलन के पांचवें खण्ड 'मानवीय प्रसंग' में कुल इक्कीस रचनाएं संकलित हैं। जिसमें रहस्यवादी भावनाओं का संगुफन है। आत्मा–परमात्मा का तत्त्वबोध है। अनुराग–विराग की आँख–मिचौनी है। विरह–वेदना की भूल–भुलैया किसी–न–किसी रूप में समाहित है। रहस्यानुभूति अनेक मायनों में प्रशंसनीय है।

तभी तो इनकी कविता में महादेवी वर्मा की आत्मा जीवंत हो उठी है। कवि का प्रयोग देखने लायक है –

'टूटी वीणा के तारों पर मन रो–रोकर गाता
कहां–कहां मन ठहर–ठहरकर कहां–कहां है जाता,
आँखों से जो दूर रहे वह दिल के बहुत निकट है,
दिखता है आसान भले ही फिर भी बहुत विकट है।'

विरह जीवन का अमूल्य क्षण है, जिसमें आदमी जीवन जीता है, क्योंकि विरह में लोग हँसते हैं, गाते हैं, रोते हैं, और आनंदित होते हैं। कहा भी गया है – 'विरहो प्रेम करै' क्योंकि प्रेम असीम संभावनाओं का काव्य है। कवि राजमणि राय 'मणि' ने लिखा है

'मिला मिलन का सुख आधा, दुःख आधा मिला विरह का,
राम तुम्हारा भी जीवन था, क्या सचमुच इसी तरह का।'

इन्हीं भावनाओं से गठजोड़ करते हुए कवि 'सुबोध' कहते हैं –
'किसका किससे कैसा नाता भूल–भुलैया सारी
नहीं किसी का कोई जग में सब है दुनियादारी।
अनहोनी होनी की घटना यहां निरंतर चलती,
जिसका अरुण–उदय है होता उसकी संध्या ढलती।'
x x x

सब कुछ धरती पर रह जाते जाना पड़े अकेला,
साथी–संगी सब ही छूटे, छूटे जग का मेला।'

यह आत्मकथ्य की कठोर सच्चाई है। जिसमें आदमी 'पेंडुलम' की भाँति डोलता रहता है।
कवि ने प्रेम के उदात्त रूप को अच्छी प्रकार उभारा है। उनकी अनुभूति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने आप में ईमानदार हैं, जो अनुभव किया उसे बदल–बदलकर सारहीन नहीं बना दिया। उदात्त प्रेम वासना रहित होता है। ईश्वर के प्रति, गुरुजनों के प्रति, माता–पिता के प्रति, संत–महात्माओं के प्रति जो प्रेम होता है, उसमें उदात्त प्रेम सन्निहित होता है –

'जननी होती है स्वर्गोपम
उसकी महिमा तो है अनुपम,
पुत्र कुपुत्र भले हो जाए
माता कभी न होती निर्मम।'

सत्य की गहराई में शब्द प्रयोग की कामना करने में कवि 'सुबोध' बहुत ऊँचे कवि प्रतीत होते हैं। कल्पना–सौंदर्य के अनेक स्थल वहां पर हैं ही, जहां कवि उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग खुलकर करता है।

'सुबोध' जी की भाषा शिल्प विधान के अनुसार अपने भाव के अनुरूप छंद विधान का निर्माण कर लेती है। [5] यही कारण कि इनको भाषा पर पूर्ण अधिकार है, क्योंकि इनकी भाषा भाव के अनुरूप चलती है। इनकी कविताओं में हिन्दी भाषा के शब्द भरे–पड़े हैं। बहुत ही कम शब्द दूसरी भाषाओं के हैं। 'भावतरंगिणी' में रस, छंद, अलंकार, गुण–रीति, बिम्ब से युक्त कविताएं अपनी सोलहों कलाओं से परिपूर्ण हैं। इनकी कविताओं में भाषा की सरलता, सहजता, संगीतात्मकता, लय–विधान निरंतर बनी हुई है। जिसके कारण इनकी अधिकांश रचनाएं गेय हैं। कुल मिलाकर 'भावतरंगिणी' काव्य–संकलन एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। इसका प्रकाशन अभिधा प्रकाशन रामदयालुनगर, मुजफ्फरपुर, बिहार ने 2021 ई0 में किया है। हिन्दी संसार में इसका स्थान सदैव बना रहेगा। ऐसी मेरी अवधारणा है।

सन्दर्भ

1. कर्मवीर। प्रसिद्ध रचनाएँ/कविताएँ अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध"
2. दीपाली अग्रवाल। हिंदी कविता में प्रकृति के विभिन्न रूप
3. धर्मेंद्र सिंह। यह कवि अपराजेय निराला, जिसको मिला गरल का प्याला
4. विष्णु नारायण। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की 5 कविताएं
5. बासुदेव अग्रवाल। मात्रिक छंदों की कविताएँ